गुरुकृपा

श्रीगुरु की कृपा के विषय पर शास्त्रों से उद्धरण

अद्वयतारक उपनिषद् से श्लोक

अद्वयतारक उपनिषद्, १४-१५

आचार्यो वेदसम्पन्नो विष्णुभक्तो विमत्सरः।
योगज्ञो योगनिष्ठश्च सदा योगात्मकः शुचिः॥
गुरुभक्तिसमायुक्तः पुरुषज्ञो विशेषतः।
एवं लक्षणसम्पन्नो गुरुरित्यभिधीयते॥

वे जो श्रेष्ठ आचार्य हैं; जो देवभक्त [विष्णुभक्त] हैं तथा अपने श्रीगुरु के प्रति समर्पित हैं; जो वेदसम्पन्न अर्थात् पूर्ण वेदज्ञान से युक्त हैं; जो योग के ज्ञाता हैं; जो योग में प्रतिष्ठित व उसके मूर्तरूप हैं; जो स्वार्थरहित व द्वेषरहित हैं; जो शुद्ध हैं, तेजोमय हैं और जिन्होंने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया है, उन्हें ही गुरु कहा जा सकता है।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।